Mrs. Suneeta Nirankari (Asst. Professor)

Semester- III

Subject- History Of Modern India (1757 A.D.- 1857 A.D)

College Name:- Indira Gandhi Government P.G. College

Bangarmau (Unnao)

आधुनिक भारत का इतिहास (1757-1857)

प्रस्तावन: 18वीं शताब्दी का भारत

1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का पतन शुरू हो गया। केंद्रीय सत्ता के कमजोर होने से क्षेत्रीय शक्तियाँ (जैसे मराठा, सिख, निज़ाम और नवाब) उभरने लगीं। इसी अराजकता के बीच यूरोपीय शक्तियों ने भारत की राजनीति में प्रवेश किया।

I: यूरोपीय शक्तियों का आगमन और संघर्ष

यूरोपीय कंपनियों का भारत आना व्यापारिक था, लेकिन उनकी आपसी प्रतिस्पर्धा ने उन्हें युद्ध के मैदान में ला खड़ा किया।

1. पुर्तगाली, डच और अंग्रेज

पुर्तगाली: वास्को डी गामा (1498) के साथ सबसे पहले आए। उन्होंने गोवा पर कब्जा किया लेकिन उनकी धार्मिक कट्टरता और व्यापारिक गलतियों के कारण वे पिछड़ गए।

डच: उन्होंने दक्षिण-पूर्वी एशिया के मसालों पर ध्यान दिया और अंग्रेजों से हारकर भारत छोड़ दिया।

अंग्रेज (EIC): 1600 में महारानी एलिजाबेथ से चार्टर लेकर आए। थॉमस रो और हॉकिन्स ने मुगलों से व्यापारिक रियायतें प्राप्त कीं।

2. एंग्लो-फ्रेंच संघर्ष (कर्नाटक युद्ध)

भारत के भाग्य का फैसला इन युद्धों ने किया।

प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-48): यह यूरोप के ऑस्ट्रियाई उत्तराधिकार युद्ध का विस्तार था। 'एक्स-ला-शापेल' की संधि से समाप्त हुआ।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54): इसमें डुप्ले (फ्रांसीसी) और रॉबर्ट क्लाइव के बीच कूटनीतिक युद्ध हुआ।

तृतीय कर्नाटक युद्ध (1758-63): 1760 के वांडीवाश के युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को निर्णायक रूप से हरा दिया।

II: बंगाल में ब्रिटिश प्रभुत्व - प्लासी से बक्सर तक

बंगाल भारत का स्वर्ग कहलाता था और अंग्रेजों की जीत का आधार बना।

1. प्लासी का युद्ध (1757)

कारण: नवाब सिराजुद्दौला द्वारा अंग्रेजों की किलाबंदी रोकना, 'ब्लैक होल त्रासदी' की घटना।

घटना: मीर जाफर (सेनापति) ने अंग्रेजों से हाथ मिला लिया। युद्ध के मैदान में नवाब की विशाल सेना हार गई।

महत्व: यह युद्ध नहीं, बल्कि एक विश्वासघात था जिसने कंपनी को बंगाल का 'किंगमेकर' बना दिया।

2. बक्सर का युद्ध (1764)

कारण: मीर कासिम कंपनी के हस्तक्षेप से तंग आ गया था और स्वतंत्र रूप से व्यापार करना चाहता था।

युद्ध: मीर कासिम, शुजाउद्दौला (अवध) और शाह आलम II (मुगल) की संयुक्त सेना बनाम हेक्टर मुनरो।

महत्व: इसने प्रमाणित कर दिया कि अंग्रेज भारत की सर्वोच्च शक्ति हैं। अब वे केवल बंगाल के नवाब नहीं, बल्कि पूरे उत्तर भारत के स्वामी थे।

इलाहाबाद की संधि (1765): कंपनी को बंगाल की 'दीवानी' मिली। रॉबर्ट क्लाइव ने 'द्वैध शासन' शुरू किया।

III एवं IV: क्षेत्रीय विस्तार की नीतियां (1770-1856)

अंग्रेजों ने अपनी सीमाओं को बढ़ाने के लिए दो मुख्य औजारों का उपयोग किया: युद्ध और कानून।

1. सहायक संधि (Subsidiary Alliance) - लॉर्ड वेलेज़ली

यह भारतीय राज्यों की स्वतंत्रता छीनने का एक मीठा जहर था।

शर्तें: राज्य अपनी सेना भंग करेगा, ब्रिटिश सेना रखेगा, विदेशी संबंध अंग्रेजों को सौंप देगा।

प्रभाव: हैदराबाद, मैसूर, तंजौर और अवध ने इसे स्वीकार कर अपनी संप्रभुता खो दी।

2. व्यपगत का सिद्धांत (Doctrine of Lapse) - लॉर्ड डलहौजी

डलहौजी एक घोर साम्राज्यवादी था। उसने तर्क दिया कि यदि किसी संरक्षित राज्य का शासक बिना पुरुष उत्तराधिकारी के मर जाता है, तो वह राज्य ब्रिटिश साम्राज्य में मिल जाएगा।

शिकार राज्य: सतारा, जैतपुर, संबलपुर, झाँसी (रानी लक्ष्मीबाई का संघर्ष) और नागपुर।

अवध का विलय (1856): यहाँ डलहौजी ने 'कुशासन' का बहाना बनाया, जिससे भारतीय सैनिकों में भारी रोष व्याप्त हुआ।

V: सिख शक्ति का उत्कर्ष और पतन

पंजाब अंतिम स्वतंत्र राज्य था जिसे अंग्रेजों ने जीता।

1. महाराजा रणजीत सिंह (1792-1839)

उपलब्धियाँ: उन्होंने 12 मिसलों को जीतकर लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।

धर्मनिरपेक्ष शासन: उनके दरबार में हिंदू, मुस्लिम और सिख सभी उच्च पदों पर थे।

सेना: उन्होंने अपनी सेना को यूरोपीय तर्ज पर आधुनिक बनाया (फौज-ए-खास)।

2. पंजाब का पतन

1839 में उनकी मृत्यु के बाद पंजाब में अराजकता फैल गई। अंग्रेजों ने दो युद्धों (1845 और 1848) के बाद कोहिनूर हीरा और पंजाब का साम्राज्य छीन लिया।

VI: मैसूर और हैदराबाद का संघर्ष

मैसूर: हैदर अली और टीपू सुल्तान ने अंग्रेजों को चार युद्धों में कड़ी टक्कर दी। टीपू को 'मैसूर का शेर' कहा जाता था। उन्होंने रॉकेट तकनीक और विदेशी कूटनीति का प्रयोग किया, लेकिन 1799 में वीरगति प्राप्त की।

हैदराबाद: यह राज्य अपनी अस्तित्व रक्षा के लिए अंग्रेजों का पिछलग्गू बना रहा।

VII: आर्थिक शोषण और भू-राजस्व व्यवस्था

अंग्रेजों ने भारत को एक 'कच्चे माल का निर्यातक' और 'तैयार माल का आयातक' बना दिया।

स्थायी बंदोबस्त (1793): लॉर्ड कॉर्नवॉलिस ने ज़मींदारों को भूमि का स्थायी मालिक बना दिया। लगान निश्चित था, जिससे किसानों पर अत्याचार बढ़ा।

रैयतवाड़ी व्यवस्था: किसानों को सीधे ज़मीन का मालिक माना गया, लेकिन लगान की दरें इतनी ऊँची थीं कि किसान साहूकारों के कर्ज के जाल में फंस गए।

महलवाड़ी व्यवस्था: ग्राम समुदाय को सामूहिक रूप से लगान देने की जिम्मेदारी दी गई।

परिणाम: कृषि का व्यावसायीकरण हुआ (नील, कपास की खेती), जिससे खाद्यान्न की कमी हुई और भयंकर अकाल पड़े।

VIII: सांस्कृतिक जागरण और सामाजिक सुधार

इस काल में भारत में आधुनिक सोच का उदय हुआ।

राजा राममोहन राय: सती प्रथा के खिलाफ आंदोलन (1829 का कानून) और प्रेस की स्वतंत्रता के पक्षधर।

शिक्षा: 1835 का मैकाले मिनट, जिसने भारत में अंग्रेजी शिक्षा की नींव रखी। इसका उद्देश्य अंग्रेजों के लिए 'काले अंग्रेज' (कलर में भारतीय, सोच में अंग्रेज) क्लर्क तैयार करना था, लेकिन इसने भारतीयों को पश्चिमी लोकतंत्र और स्वतंत्रता के विचारों से भी परिचित कराया।

स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह: ईश्वर चंद्र विद्यासागर और अन्य समाज सुधारकों ने भारतीय समाज की जड़ता को तोड़ा।